

## बचपन की यादों में

बरसात का समय था। नीले आभान काले बाढ़ों  
से भर गया था। शुरज हन बाढ़ों के पीछे छिपा था।  
बिजली चमक रही थी। बाढ़ों से पानी की छोटी-छोटी  
झूँझ मोती-झेस धरती में पड़ा। बरसात शुरू हो गया।  
बारिश के साथ हुई दूध भी वह रही थी। दूध ने  
ही मिट्ठी की जग्ह वातावरण में फैला दिया।  
वह में वह अकेली थी। वह उस छोटी घर के शब्दों छोटे  
खिड़कयों से बारिश की मनोरंजक दृश्य देख रही थी।  
वीर-वीर वह अपनी बचपन की यादों में लीन हो गई।  
बारिश की जैसे उसकी आँखों से आँसू बहने लगी।

जब वह अपनी बचपन की लारे में शोचती थी,  
तब भादा उसकी आँखें भर जाती हुई थीं। क्योंकि उसकी  
बचपन की यादें खिलाने, नटाहटे या खुशियाँ से भरी नहीं,  
हताशा और दुःख से भरी थीं। वीर-वीर उसकी मन  
में एक ऐसा चेहरा आया और जब वह उस चेहरा को  
समझ पाया तब उसकी होठों ने द्रेस मंत्रण किया—  
“मेरी पापा...”। उसकी मन पापा की यादों से भर गया।  
और ऐसा उस दिन की यादें उसकी आपास आया जिन्हें  
इसे अपनी धूरी जिंदगी में कभी नहीं भूल सकती।

कस सालों के पहले ५<sup>व</sup>क बारिंग का दिन था। तब वह पाँचवी में पढ़ती थी, वह श्कूल जाने की तैयारी कर रही थी। वह नाश्ता करने के लिए उसी तका आया। अचानक वह रुक गयी। "माँ की आवाज सुन रही हूँ। लेकिन माँ किससे बात करते हैं? घर में किसी दोनों अकला है ना?" उसने सोचा। वह माँ की पास गया और माँ से पूछा - "अभ्य किस से बात कर रही है माँ?" "मैं तेरी पापा को नाश्ता करने के लिए लिहु लुला रही हूँ।" माँ ने कहा। "लेकिन पापा यहाँ नहीं है माँ।" उसकी बात सुनकर माँ ने मुश्कुराया और धन्य सिर में ल्पाकर उससे कहा " हाँ मीनु, मैं वह भूल गया।"

~~मीनु की जीवनी~~

~~मीनु~~ ही हूँ "माँ सदा ऐसी ही थी थी।" मीनु ने माँ की बारे में सोचने लगी। अभ्य माँ-पाप के घार की बाइ में और उसकी धरिकार की छुशीयों के लारे में सोचने लगी। "माँ अदा ऐसी ही थी थी। वो सदा पापा से बात करते ही रहती थी। लेकिन नहीं सोचती थी कि माँ की बातें सुनने के लिए पापा उसकी पास है या नहीं। उस दिन पापा घर में नहीं था। वो काम-संबंधी बातें के लिए दिलाई गया था। लेकिन माँ वह सब भूल गयी। क्योंकि माँ सदा पापा की सार्थ वही शहनी चाहती थी, पापा को भी माँ से दूर रहनी चाह रुकीकर था। मैंने नाश्ता करके घर श्कूल जाने के लिए रुकीकरा जब दरवाजा तक गया तब वह याद आया कि ~~वह~~ रुक भूल गया है। मैंने माँ की पास लौट आया और पूछा " पापा कह आइगा ?" "कह आइगा नहीं।" - माँ ने कहा। इतना सुनकर मैं श्कूल जाया।

माँ से जेशा पूछना कोलिंग मुक्त कारण था : कि इसके दूसरे दिन माँ की जन्मादिन था। माँ की जन्मादिन हमारे घर के ब्रोदार था। मेरी जन्मादिन भी इसी अह घूम - धाम से कभी नहीं मनाया था। जब मैं यह बात पापा से कहा तब उन्होंने कह कि हमारे घर और पारवार की आज सभी खुशियों की कारपा लाख माँ ही है। इसलिंग जैसे माँ हमें आनंद देते हैं क्यों हम भी माँ की जन्मादिन उत्सुकी तरह मनाकर उन्हें खुशी करनाना है।

इस शूल की में पहली घंटी थी, अध्यापिका ने नई पाठ भीष्म रही थी। तब शूल की घून ने कक्षा की दरवाजा में आया और अध्यापिका की बुलाया। वह दोनों की जीव के थोड़ी दूरी की बात - चीत के बाद अध्यापिका ने मुझे बुलाया और कहा की हम घर पाना है। मैंने पूछा कि - "क्यों?" तोकिन मुझे कोई खवाल नहीं लिया। हम घर पहुँचा और मैंने अध्यापिका की हाथ \* पकड़कर घर की दरवाजे के ओर चला। आश्चर्य की बात यह था कि घर के काहर बहुत सारे लोग खड़ा हो गये थे। जब हम घर की अंदर प्रवेश किया तब भी वहाँ कुकुर भी थे। शब लोग मुझे देख सके की रहे थे। तोकिन मुझे नहीं बताया कि उन दुष्टों में क्या है। घर के अंदर बरांदा नके आकर हम सके गया। पापा जगीन ने पड़ा हाथ। मैंने सीचा कि वो शो रहा है। माँ पापा की पास बढ़ गयी है।

पापा की शहीद में एक सफेद भावरण था।

उसकी घेरे के फोनों और उगालयों से जैसे लड़के  
और उसका स्थिर रुप में भी उसकी नाँची थी। भुजे कुछ  
नहीं भमझा याद पापा सो रहा है तो माँ क्यों रोते हैं?

जब माँ ने भुजे देखा तब वह बीहे उठाया। वह धीरे  
धीरे उसके मेशी पास आई। धीरे उसकी काँपती हाँथों  
मेरी लालाट पर दबाया। फिर पापा की ओर गुड़कर  
उससे कहा - “देखो इमारे लेटी आया है। औंकं छोलो  
और देखो तेरी परिवार को, आप ने क्या कहा वा हैं जी?  
आपको धाद है ना? लोकने भुजे याद हैं। आप ने कहा  
वा कि आप भदा इमारे साथ ही रहेंगा। वह दमं  
कभी नहीं अकेला बना रहेंगा। लोकने क्या हुआ?”

माँ ने जोर से रही थी। वह सुनकर मैं भी  
शेने रहा। माँ ने उसकी काँपती हाँथों से मेरी हाथ  
पकड़ा और कहा - “तू क्यों रोते हैं? तेरे साथ तेरी माँ है  
ना। माँ भदा तेरी साथ ही रहेगी लेटी, मैं उसे कभी  
नहीं अकेला बना दूँगी। तू अकेली नहीं है। लोकने  
मैं... मैं... अकेली है।”

उस दिन की बाद मैं माँ की

हाँथों में कभी एक मुस्कुराहट कभी नहीं देखा था। पापा  
भदा कहते थे कि माँ एक दीप है जो इमारे घर में  
अपने परिवार में प्रकाश फैलाते हैं। लोकने उस दिन भुजे  
को कि वह दीप को जलाने वाला ‘पापा’ ही था।

भुजे जाया तब वह दीप भी बुझ गया। उस अकेला हो गया।

उसी दिन उसकी बचपन का सपना

माँ से ऐसा पूछना कोलिड़ मुक्त कारण था ; कि दूसरे दिन माँ की जन्मादिन था । माँ की जन्मादिन हमारे घर के त्योहार था । मेरी जन्मादिन भी इतनी अच्छी - धूम - धाम से कभी नहीं मनाया था । जब मैं वह बात पापा से कहा लेकि उन्होंने कह कि हमारे घर और परिवार की आज सभी खुशियों की कारण हमें माँ दी है । इसको जैसे माँ हमें आनंद देते हैं कैसे हम भी माँ की जन्मादिन उत्सुकी तरह मनाकर उन्हें खुशी बनाना है ।

स्कूल की में पहली घटी थी । अध्यापिका ने गई पाठ शीख रखी थी । तब स्कूल की छुन ने कक्षा की दरवाजा में आया और अध्यापिका को बुलाया । वह दोनों के बीच के घोड़ी देह की जात - घीत के बाद अध्यापिका ने मुझे बुलाया और कहा की हम घर जाना है । मैंने पूछा कि - "क्यों?" लौकिन मुझे कोई जवाब नहीं मिला । हम घर पहुँचा और मैंने अध्यापिका की हाथ पकड़कर घर की दरवाजे की ओर चला । आश्चर्य की जात थी कि घर के लादर बहुत सारे लोग खड़ा हो गए थे । जैसे हम घर की अंदर प्रवेश किया तब भी वहाँ टक्के थे । शब्द लोग मुझे टक्के से रहे थे । लौकिन मुझे नहीं समझ पाया कि उन टक्के में क्या है । घर के अंदर बरांदा नके आकर हम भक्त गया । पापा जगीन में पड़ा हुआ । मैंने सीखा कि वो शो रहा हुआ माँ पापा की पास जैठ गयी हुआ थी ।

पापा की शरीर में इक भैंस आवरण था।

उसकी दैरे के फोनो और उग्गीलयों से जुड़ी बातें  
और उसका लिटर भी में भी ऐसी बाँधी थी। युझे कुछ  
नहीं समझा याद पापा सो रहा है तो मैं क्यों रोता हूँ?

माँ ने मुझे देखा तब वह धीरे उठाया। वह धीरे  
दीरे उसकी मेरी पास आई। धीरे उसकी काँपती होंठों  
मेरी और जलाट पर ढाकाया। फिर पापा की ओर बुढ़कर  
उससे कहा - “देखी इमारे बेटी आया है। ऊँचें छोलो  
और देखो तेरी परिवार को।” आप ने बरा कहा था या नहीं?  
आपको आद है ना? लोकने मुझे याद है। आप ने कहा  
था कि आप भक्ता इमारे साथ ही रहेंगा। इसमें  
कभी नहीं अकेला बना देंगा। लोकने भव क्या हुआ।”

माँ ने जोर से रोती रही थी। वह सुनकर मैं भी  
रोने रुका। माँ ने उसकी लांबी काँपती हाथों से मेरी हाथ  
पकड़ा और कहा - “तू क्यों रोता है? तेरे साथ तेरी मौं है  
ना। मौं भक्ता तेरी हाथ ही रहेगी लही। मौं युझे कभी  
नहीं अकेला बना देंगी। तू अकेली नहीं है। लोकने  
मौं... मौं... अकेली है।”

उस दिन की बाद मैं मौं की

दींठों में कभी न इक मुश्कुराहट कभी नहीं देखा था। पापा  
भक्ता कहते थे कि मौं इक दीप है जो इमारे घर में  
और परिवार में प्रकाश लाते थे। लोकने उस दिन मुझे  
समझा कि वह दीप को जलाने वाला ‘पापा’ ही था।  
जब पापा चल गया तब वह दीप भी बुझ गया।  
इमारी सभी छुशियाँ भी नष्ट हो गया। इम अकेला ही गया।  
युझे मेरी सुंदर और छुशियाँ से भरी बचपन इक सपना  
बन गया।